प्रश्न—1. लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा भी नहीं फिर भी उनके व्यक्तित्व से वे क्यों प्रभावित थीं ?

उत्तर—लेखिका की नानी परंपरागत रूप से अनपढ़, परदा करने वाली स्त्री थीं। उनका विवाह एक सुशिक्षित व्यक्ति से हुआ था जो विलायत से वकालत करने के बाद अंग्रेज़ी रीति-रिवाज़ों के अनुसार जीवन व्यतीत करने लगा था। किंतु नानी ने पति के रहन-सहन का अपने जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ने दिया। उन्होंने अपने पति के सामने अपनी किसी इच्छा-आकांक्षा अथवा पसंद-नापसंद को व्यक्त नहीं किया। न ही उन्होंने अपने पति के निजी जीवन में कोई दखल दिया, न ही उसमें साझेदारी की। वे अपने तरीके से अपनी ज़िंदगी जीती रहीं। दूसरों की तरह जीवन नहीं जिया। दूसरों की तरह जीवन न जीने के लिए विवश न होने पर ही वास्तविक स्वतंत्रता है। इस प्रकार उन्होंने अपनी इच्छा से,

Scanned by TapScanner

जैसा चाहा वैसा जीवन जिया। इसीलिए लेखिका नानी को न देखने पर भी उनके लीक से हटकर स्वतंत्र जीवन जीने के कारण उनसे प्रभावित थी।

प्रश्न—2. लेखिका की नानी की आज़ादी के आंदोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही ?

उत्तर—लेखिका की नानी ने आज़ादी की लड़ाई में व्यक्तिगत रूप से सक्रिय भागीदारी नहीं की परंतु अपनी पुत्री का विवाह कराने का दायित्व स्वतंत्रता-सेनानी प्यारेलाल शर्मा को सौंपा। उन्होंने उनसे वचन लिया कि वे उसका विवाह अपनी तरह का आज़ादी का सिपाही ढूँढ़कर करवा देंगे। इससे ज्ञात होता है कि उनके मन में देश की स्वतंत्रता के प्रति एक जुनून था। इस स्वतंत्रता आंदोलन में उनका योगदान भावात्मक था।

प्रश्न—3. लेखिका की माँ परंपरा का निर्वाह न करते हुए भी सबके दिलों पर राज करती थीं। इस कथन के आलोक में—

(क) लेखिका की माँ की विशेषताएँ लिखिए।

(ख) लेखिका की दादी के घर के माहौल का शब्द-चित्र अंकित कीजिए।

उत्तर—(क) लेखिका की माँ की दो विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं—

(1) उनमें सुंदरता, नज़ाकत, गैर-दुनियादारी के साथ ईमानदारी और निष्पक्षता थी।

(2) वे कभी झूठ नहीं बोलती थीं और न ही गोपनीय बात को दूसरे पर जाहिर होने देती थीं।

(ख) लेखिका की दादी के घर का माहौल सादा जीवन और उच्च विचारों वाला था। उसके पिता स्वतंत्रता सेनानी थे। घर में खादी पहनी जाती थी। फिर भी माँ की ससुराल वाले अंग्रेज़ों से काफ़ी प्रभावित थे। उनके घर में साहबी ससुर का दबदबा था। भले ही लड़के ने आज़ादी की लड़ाई में कितनी ही प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी, फिर भी घर में उनका दबदबा न था। घर में निजता बनाए रखने की छूट थी।

प्रश्न—4. आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों माँगी ?

उत्तर—परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की होने की मन्नत इसलिए माँगी होगी कि उसका पोता स्वतंत्रता सेनानी बन गया था। उससे उसकी आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं हो पा रही थी। वह नहीं चाहती थी कि उसका पड़पोता भी अपने पिता का अनुसरण करे। दूसरे, लेखिका की परदादी को लीक से हटकर चलने का शौक था। उनके परिवार में हर बहू को पहला बच्चा लड़का ही होता रहा था। परंतु दादी माँ इस परंपरा को तोड़ना चाहती थीं। इसीलिए उन्होंने पतोहू के लड़की होने की मन्नत माँगी।

प्रश्न—5. 'डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है'—पाठ के आधार पर तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर—निस्संदेह किसी भी व्यक्ति को सहजता से सही राह पर लाया जा सकता है। दादी माँ यदि हवेली में सेंध लगाकर घुसे चोर को डरातीं-धमकातीं अथवा उपदेश देकर चोरी करना छोड़ने के लिए कहतीं तो संभवत: चोर चोरी करना नहीं छोड़ता। दादी माँ ने यह जानते हुए भी कि वह चोर है, कुएँ से पानी मँगवाया, स्वयं भी पिया और उस चोर को भी पिलाया। पानी पिलाने के पश्चात माँ जी ने उसे सहजता से कहा कि 'एक लोटे से पानी पीकर हम माँ-बेटे हुए। अब, बेटा, चाहे तो तू चोरी कर, चाहे खेती।' इस प्रकार उसने सहजता से चोर को सीधी राह पर ला दिया। चोर ने चोरी छोड़कर खेती करना आरंभ कर दिया।

प्रश्न—6. 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'—इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

Scanned by TapScanner

उत्तर—लेखिका कर्नाटक के छोटे से कस्बे बागलकोट में रहने लगी थी। उसके दो बच्चे स्कूल जाने लायक थे। परंतु वहाँ कोई अच्छा स्कूल नहीं था। उसने लोगों से सलाह करके कैथोलिक बिशप से कस्बे में एक प्राइमरी स्कूल खोलने की प्रार्थना की। किंतु उन्होंने क्रिश्चियन जनसंख्या कम होने के कारण स्कूल खोलने से मना कर दिया। लेखिका ने उनसे कहा कि गैर-ईसाई बच्चों को भी शिक्षा का अधिकार है। इस पर बिशप ने ऐसी शर्तें रखीं जिन्हें पूरा करना असंभव था। इस पर लेखिका ने स्वयं हिंदी-अंग्रेज़ी-कन्नड़ भाषा के स्कूल की स्थापना और उसमें बच्चों को पढ़ाया। उसके स्कूल में पढ़े बच्चे शहर में अच्छे स्कूलों में भर्ती हो गए।

प्रश्न—7. पाठ के आधार पर लिखिए कि जीवन में कैसे इंसानों को अधिक श्रद्धा भाव से देखा जाता है?

उत्तर—जीवन में उन इंसानों को अधिक श्रद्धा-भाव से देखा जाता है जो सदैव सत्य बोलते हैं और गोपनीय बातों को अपने तक सीमित रखते हैं। दूसरों को अपनी मित्रता बनाए रखने की छूट देते हैं। बच्चों के साथ दोस्ती का व्यवहार करते हैं।

प्रश्न—8. 'सच, अकेलेपन का मज़ा ही कुछ और है'—इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन एवं लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर—लेखिका की बहन रेणु का व्यक्तित्व लेखिका के व्यक्तित्व से अधिक अकेलापन लिए हुए है। वह स्कूल में अचला के साथ गाड़ी में बैठकर नहीं आती थी। गाड़ी को वह सामंतशाही का प्रतीक मानती थी। एक बार चुनौती देने पर उसने पत्र लिखकर जनरल थिमैया का चित्र मँगवा लिया था। उसे परीक्षा देने से परहेज था। बी.ए. की परीक्षा देने के समय वह अड़ गई थी कि उसे समझाओ कि बी.ए. करना क्यों आवश्यक है। सभी ने अपने-अपने तर्क दिए लेकिन उसे कोई तर्क विश्वसनीय नहीं लगा। परंतु पिताजी के कहने पर उसने बी.ए. किया। इसी प्रकार एक बार दिल्ली में 18 इंच वर्षा हुई। सड़क पर कोई वाहन नहीं निकला। रेणु की स्कूल बस लेने नहीं आई। सबके समझाने पर भी वह पैदल स्कूल चल दी। दो मील पैदल चलकर स्कूल पहुँची और फिर घर लौटी। लेकिन उसे ज़रा भी मलाल नहीं हुआ।

इसी प्रकार लेखिका का व्यक्तित्व भी अकेलेपन में अधिक रोमांच का अनुभव करता है। शादी के बाद वह बिहार के छोटे से कस्बे में रही। वहाँ मर्द-औरतें, पति-पत्नी होते हुए भी पिक्चर देखने जाते तो अलग-अलग दड़बों में बैठते। परंतु लेखिका ने उन औरतों को पराये मर्द के साथ अभिनय करने के लिए तैयार कर लिया। इसी प्रकार लेखिका ने कर्नाटक के छोटे से कस्बे में हिंदी-अंग्रेज़ी-कन्नड़ का प्राइमरी स्कूल खोलकर अपने व्यक्तित्व की दृढ़ता का परिचय दिया। लेखिका के लीक से हटकर लेखन ने भी अपना रास्ता स्वयं बनाया।

इस प्रकार दोनों को अकेलेपन में रोमांच का अनुभव होता है। दोनों निपट अकेली, अपनी धुन में मंजिल की ओर बढ़ती चली जाती हैं। लेखिका ने सत्य ही कहा है कि अकेलेपन का मज़ा ही कुछ और है।

Scanned by TapScanner